NH Notes – 21

"खापलैंड पर इसे 'नगरी' कहिए 'गाँव' नहीं!"

प्राचीन हरियाणा इतिहास में खापलैंड यानी प्राचीन हरियाणा की धरती पर गाँव नहीं सिर्फ नगर या नगरी होते थे|

क्योंकि यहां की धरती इतनी उपजाऊ और लोग इतने मेहनती व् अपनी धरती से जुड़े रहने वाले रहे हैं कि इन्होनें घर में ही रहकर मेहनत से हर साधन-सुविधा जोड़ी होती थी| इसलिए हर बसासत एक छोटा व् स्वतंत्र गणराज्य हुआ करता था| इनमें जीवन यापन और सुख-सुविधा की हर चीज यथास्थल मिलती आई|

खेती के छोटे से ले बड़े औजारों की बात रही हो,

गृह निर्माण के कारीगर रहे हों,

मिट्टी के बर्तन रहे हों,

आभूषण रहे हों,

करियाने के सामान रहे हों,

कपडा-लत्ता-बिस्तर बनाने-बुनने-भरने के लघु कारखाने रहे हों,

तेल निकालने अथवा आटे की चक्कियां रही हों,

गुड-शक्कर-खांड बनाने के कोल्हू रहे हों,

घर का बना घी-मिष्ठान;

हर चीज वहीँ की वहीँ बनती व् मिल जाती थी| और इसीलिए हरियाणा का आज की भाषा में हो चला हर गाँव एक नगरी कहलाता था|

तीजों-त्योहारों-उत्सवों पर जब भी नारे-जयकारे-हल्कारे लगते थे तो उसमें नगरी शब्द बोला जाता था| जैसे मेरी नगरी निडाना है, तो जब भी निडाना में कोई आर्य समाजी सम्मेलन होता था तो मंच से "बोल निडाना नगरी की जय" का उद्घोष हुआ करता था| कोई बाजीगर-नट खेल तमाशे करने आता तो वो भी अपने कार्यक्रम का आगाज और समापन "निडाना नगरी की जय" बोलने से ही किया करता था| नगरी में सांगी-सतसंगी आते थे तो अपने सांगों में भी या तो " निडाना नगरी की जय" या फिर "बोल दादा नगर खेड़े की जय" बोलते थे| यानी हर प्रकार के नारे-जयकारे-हल्कारे में या तो "नगरी" शब्द आता था या "नगर", कहीं भी गाँव शब्द का प्रयोग नहीं होता था|

परन्तु

एक तो संस्कृति को संजोये रखने को ले के हमारी उदासीनता,

दूसरी इन पहलुओं पर जागरूक लोगों की खराब नीयत,

तीसरा दूसरे राज्यों-देशों से पलायन करके आने वाली नश्लें,

चौथा नगरियों में दम तोड़ते लघु उद्योगों व्

पांचवा व्यापारीकरण और धार्मिक कटटरता का एक हद से ज्यादा पसर जाना;

इन सब बातों ने हमारी इस स्वर्णिम सभ्यता को लुप्तप्राय ही बना दिया है|

बड़ी विडम्बना की बात है कि इतने सारे जो लघु उद्योग हमारे यहां हर नगरी में होते थे वो सब लुप्तप्राय हो चले हैं और यह सब बावजूद इसके कि लघु उद्योगों को बढ़ावा देने हेतु तमाम तरह की केंद्र व् राज्य सरकारें पता नहीं कितनी योजनाएं और स्कीमें बनाने-लागू करने के दावे करती हैं| नए कुटीर व् लघु उद्योग तो अस्तित्व में आने दूर की बात; हरियाणा की धरती पर तो इसका उल्टा हुआ है| जिन कुटीर उद्योगों की वजह से हरियाणा की हर बसासत गाँव नहीं अपितु नगरी बोली जाती थी, वो अब वाकई में गाँव ही बनते जा रहे हैं|

दो-तीन व्यापारिक जातियों ने जैसे हर प्रकार के उद्योगों पर मोनोपोली बना उनको शहरों में समेट लिया है और नगरी व्यापारियों-धर्मावलम्बियों की भाषा में गाँव) सिर्फ उनके लिए पैसा चूसने की इकाई बनके रह गए हैं| और इसका दूसरा बुरा प्रभाव यह हो रहा है कि लोग अपनी प्राचीन गणराज्यीय सभ्यता तक को नहीं सहेज पा रहे हैं|

आप पूरे भारतवर्ष में घूम लीजिये, ऐसी साधन-सम्पन्न स्वावलम्बी गणराज्यायिक व्यवस्था या तो सिर्फ खापलैंड पर होती आई या इससे सटे इलाकों में|

तो अब कहीं ना कहीं जा के तो इस पर रुक के सोचना ही होगा, वरना ना हरियाणा बचेगा, ना हरियाणत और फिर शायद हरियाणवी भी अपने आपको हरियाणवी कहने से कतराएं, लजाएँ या डरने भी लग जाएँ|

जय दादा बड़ा बीर (दादा नगर खेड़ा)!

Author: Phool Malik

Publisher: Nidana Heights

Date: 03/02/2015